मूलतः हिन्दु धर्म-निरपेक्ष हैँ तो भारत को धर्म-निष्पक्ष होना चाहिये!

हिन्दू-धर्म सभी लोगों को अपने-अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की उपासना करने को कहता है?

हालाँकि गान्धी जी को सनातन धर्म का जिसे आज हिन्दु-धर्म भी कहा जाता है, विशेषज्ञ नहीँ कहा जा सकता और उनके कई कृत्य या उक्तियाँ धर्म-सम्मत भी नहीँ हैँ, फिर भी भारत मेँ उनके कथनों की स्वीकार्य्ता को ध्यान मेँ रखते हुए इस लेख का प्रारम्भ भी उन्हीँ के कथन से किया जाता है -

> **"हिन्दू-धर्म सभी लोगों को अपने-अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की उपासना करने को कहता है, और इसलिए उसका किसी धर्म से कोई झगड़ा नहीं है। हिन्दू-धर्म अनेक युगों का विकास फल है। हिन्दू लोगों की सभ्यता बहुत प्राचीन है और उनमें अहिंसा समायी हुई है। हिन्दू-धर्म एक जीवित धर्म है। हिन्दू-धर्म जड़ बनने से साफ इनकार करता है।" : (हिन्दु धर्म क्या है से उद्धृत)**

मैं ऐसा हिंदू नहीं बनना चाहता जिसका धर्म हो मुसलमानों से नफरत करना, मैं ऐसे मुस्लमान का भी हिमायती नहीं बनना चाहता जो हिंदुओं से नफरत करता हो| मैं इस तरह के सारे झंझट से मुक्त होना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ दुनिया धार्मिक ही रहे पर सुख चैन से रहे...वो ज्यादा महत्वपूर्ण है|

मेरा इस पृष्ठ-भुमि मेँ एक मूल-प्रश्न है कि हिन्दु-बहुल भारत वर्ष मेँ धर्म-निरपेक्षता की आवश्यकता क्योँ है? राजनीति किसी भी धर्म से परे होनी चाहिए, आदर्श राज-धर्म की आवश्यकता धर्म-निष्पछता है, धर्म-निरपेक्षता नहीँ. आज जो काँग्रेस-जनित धर्म-निरपेक्षता है उससे भारत को बहुत हानि हुई और वो क्षद्म-धर्मनिरपेक्षता है

हम धर्म-निरपेक्ष क्योँ होँ, हम धर्म-निष्पछ क्योँ न होँ?

हिन्दु आज अपने धर्म के प्रति समर्पित नहीँ है. एक उदासीनता की भावना है जो कि की बार इस्के प्रते हिकारत का नजरिया भी दर्शाती है. क्योँ हिन्दुओँ को अपने हिन्दु होने का हर्व नहीँ है. क्या हमारी मजबूरियाँ है जो हमेँ अपने धर्म से उदासीन बनाती है? हमेँ पिछले सत्तर साल से पढाया जा रहा है कि हिन्दुओँ को हिंसा नहीँ करनी चाहिये, हिन्दुओँ को शस्त्र नहीँ रखने चाहिये और हिन्दुओँ को अन्य धर्मोँ का आदर करना चाहिये. क्षद्म-धर्मनिरपेक्षता की आड मेँ पढाये गये ये पाठ आज हिन्दु-मानसिकता पर इतना प्रभाव छोड चुके हैँ कि आज हिन्दुओँ को ये पाठ अपने अस्तित्व के लिये आवश्यक लहने लगे हैँ कि जैसे यह मात्र इन्हीँ का कर्तव्य है कि वे निरीह बने रहेँ, कमजोर बने रहे, अपनी रक्षा मेँ असमर्थ रहेँ और अन्य सभी धर्मोँ का सम्मन करते रहेँ भले ही वो उनके धर्म का निरादर करेँ और उनले प्रति गम्भीर असहिष्णुता प्रदर्शित करेँ.

तुष्टीकरण की कपटपूर्ण चाल

यह वो नीति है जिसके अंतर्गत एक राजनेता अन्य धर्मावलम्बियों को उस हिन्दु धर्म से सावधान रहने के लिये कहता है और उनकी रक्षा करने का आश्वासन देना चाहता है जिन्हें हिन्दु धर्म से कोई ख़तरा ही नहीं है. कैसी अद्भुत विडंबना है कि सारी दुनिया आज इस्लाम की वास्तविकता को भली - भांति समझती है तो भी हमारे कुछ आत्मघाती हिन्दू राजनेता अब तक यही मानसिकता क्यों पाले हुए हैं कि सभी धर्म समान हैं, कोई भी धर्म हिंसा नहीं सिखाता! कैसी अद्भुत दृष्टिकोण है हमारी कि एक तथा कथित धर्म-निरपेक्ष देश में 'अल्पसंख्यक' और 'बहुसंख्यक' जैसे खतरनाक साम्प्रदायिक शब्दों को अपने वोट बैंक के लिए थोपने वाले, धारा 370 बना के अपने ही देश के अभिन्न अंग कश्मीर से हिन्दुओं का संहार करवाने वाले, एक धर्म-निरपेक्ष देश में समान नागरिक संहिता न बनाकर, कट्टर मुसलामानों को विशेष अधिकार दिलवाकर, तीन करोड़ से अधिक बांग्लादेशी घुसपैठियों को अवैध भारतीय नागरिकता अपने वोट बैंक के तौर पर दिलवाकर, धर्म को लेकर सबसे भयंकर साम्प्रदायिक राजनीति करने वाले कांग्रेस जैसे राजनैतिक दलों को को हम 'सेक्युलर' मानते हैं और इन महापापों का विरोध करने वालों को साम्प्रदायिक कहते हैं?

आज भारत वर्ष में अपने को हिन्दु घोषित करना साम्प्रदायिक है और महामार्ग को घेर कर नमाज पढने वालों को धार्मिक अधिकार हैं. आज हैदराबाद में मन्दिर में सायंकालीन पूजा-आरती मुस्लिमों की शांति भंग करती है और प्रतिबन्धित हो जाती है परंतु पाँच वक्त की नमाज के लिये पूरे शहर में सभी मस्जिदों में लाउड्स्पीकर का प्रयोग स्वीकार्य है. क्या यह तुष्टीकरण की क्षद्म-धर्मनिरपेक्षता नहीं है?

'सर्व धर्म-समभाव, सभी धर्मों की समानता की एक भारतीय अवधारणा है। यह अवधारणा रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद ने स्वाकारा था परंतु गांधी जी के बाद सत्ता-उन्मादी हिन्दु विरोधी कांग्रेसी नेताओं ने इस को विकृत रूप देकर धर्म-निरपेक्षता का नाम दे दिया जो कि वास्तविकता के धरातल पर मुस्लिम-तुष्टीकरण के सिवा कुछ नहीं है.

मीडिया के 'ख़बर-रंडियों' के कपट

इस कपट-पूर्ण चाल में मीडिया के 'ख़बर-रंडियों' ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया और सत्ता से बहुभाँति उपकृत भी हुए. गुजरात में मुसलामानों के ही द्वारा किये गए एक उन्माद के प्रतिक्रिया स्वरुप मारे गए दो हजार मुसलामानों के लिए तो ये तथाकथित 'सेकुलर' मिडिया वाले अपने आंसुओं से कलम भिगो-भिगोकर बड़ी तत्परता से दिन रात वर्षों तक लिखते नहीं थके, परन्तु विगत 65 वर्षों से कश्मीर, फिर केरल और अब असम में क़त्ल किये गए लाखों निर्दोष हिन्दू माँ, बहन, बेटियों, बच्चों, पुरुषों, वृद्धों के बारे में लिखने के लिए उनके दिमाग और हाथों को लकवा मार जाता है. इससे बड़ी आत्म-प्रवंचना और क्या हो सकती है? ये सबको पता है क्यों उनके दिमाग और हाथों को लकवा मार जाता है, वह है: इस्लाम रूपी हिंसक जानवर का भय! ये तथाकथित 'मानवतावादी', सहिष्णु 'सेकुलर' मीडिया वाले भली भांति जानते हैं की अगर इस्लामी 'जिहाद' के बारे में लिखा या दिखाया तो उनके 'हिट लिस्ट' में उनका नाम लिख लिया जायेगा, हिन्दुओं के विरुद्ध चाहे जितना लिखो, कुछ होने वाला नहीं क्योंकि हिन्दू कभी जिहादी जानवर जैसा हिंसक बन नहीं सकता। इन छद्म मानवता वादियों का ह्रदय केवल मुसलामानों के लिए ही रोता है, क़त्ल किये गए और अब भी क़त्ल किये जा रहे असंख्य हिन्दुओं के लिए नहीं।

इस्लाम का क्षद्म भातृत्व

इस्लाम का भातृत्व केवल मुसलामानों तक ही सीमित होता है! धर्म तो वह होता है जो विश्व-बंधुत्व का सन्देश फैलाये, जो वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे भवन्तु निरामया: की भावना के साथ सारे संसार की मंगल कामना करे। जो ग्रन्थ अन्य मतावलंबियो का नाम लेकर स्पष्ट रूप से निर्देश देता है कि ' तुम यहुदिओं, ईसाईयों और किसी भी गैर-मुस्लिम को अपना मित्र न बनाओ, उन्हें घात लगाकर यातना देकर क़त्ल करो' तो वह धर्म ग्रन्थ कैसे हो सकता है? हर मुस्लिम को एक क्रूर, निष्ठुर हत्यारा बनाने के उद्देश्य से जानवरों को 'जिबह' जैसे दर्दनाक मौत देकर मांस खाने के लिए स्पष्ट निर्देश देने वाले क्रूर विचारधारा को एक धार्मिक विचारधारा कैसे माना जा सकता है?

मुसलमानों में जितने भी अच्छे इंसान बने या अब भी हैं, वे केवल सतही तौर पर खुद को मुसलमान मानने को मजबूर थे या हैं, (जिनकी संख्या नगण्य के बराबर है). ये चन्द गिने-चुने इंसान ब्यावहारिक और मानसिक तौर पर उसी बैदिक / हिन्दु विचारधारा और सिद्धांत को मानते और जीते हैं जो शाश्वत है, सनातन है, प्रकृति और इश्वर के नियमों के अनुरूप है. वे इस्लाम की बेहूदी, बेतुकी, अत्यंत मूर्खतापूर्ण, क्रूरतम, ख़ूनी, लुटेरी विचारधारा को वे अपने जीवन में प्रवेश करने नहीं देते, जिसके फलस्वरूप ही वे अच्छे इंसान बने। काजी नजरुल इस्लाम, उस्ताद बिस्मिल्ला खां, बड़े गुलाम अली खां, अश्फाख उल्ला खां ,खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे और भी अनेक महान मुस्लिम महापुरुष इसके जीते -जागते उदाहरण थे, और आज भी अनेकों महान मुस्लिम जीते - जागते उदहारण हैं। अब जब ज़ावेद अख़्तर ने राज्य सभा में “भारत माता की जय” बोल दी तो अब देखना है कि उनके ख़िलाफ़ फतवा कौन देगा? देखना है कि कब कौन तथाकथित धार्मिक नेता या कठ्मुल्ला उनकी मौत का फर्मान नहीं सुना देता?

गर्व से कहो हम हिन्दु हैँ

सनातन धर्म / वैदिक धर्म या हिन्दु धर्म ‘सर्व-धर्म समभाव’ की बात करता है. हिन्दू धर्म (संस्कृत: सनातन धर्म) विश्व का एक प्राचीनतम धर्म है। यह वेदों पर आधारित धर्म है, जो अपने अन्दर कई अलग-अलग उपासना पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए है। अनुयायियों की संख्या के आधार पर ये विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, संख्या के आधार पर इसके अधिकतर उपासक भारत में हैं और प्रतिशत के आधार पर नेपाल में है। हालाँकि इसमें कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, लेकिन वास्तव में यह एकेश्वरवादी धर्म है।

मेरे विचार से धर्म बस वही है जो प्रकाश की ओर ले जाए| और प्रकाश क्या है, उसके लिए एक मिनट ठहरिये, मौन हो जाइए और अपनी आत्मा से पूछिए|

हम सर्व प्रथम मानव हैं और फिर भारतीय - उस धर्म को मानने वाले जहाँ ‘सर्व-धर्म समभाव’ सिखाया ही नही जाता, व्यव्हार में भी लाया जाता है. और इस् लिये अगर भारत में हिन्दु बहु-संख्यक हैँ तो फिर हम धर्म-निरपेक्ष क्यों हों, हम धर्म-निष्पक्ष क्यों न हों?